

एम्स में ऑफ-पंप सर्जरी कर बचाई युवक की जान

संवाद न्याम एजेंसी

ऋषिकेश। नुकीली वस्तु से दिल में गहरी चोट लगने के बाद गंभीर हालत में एम्स ऋषिकेश पहुंचे श्यामपुर निवासी युवक को ट्रॉमा विशेषज्ञों की टीम ने बेहद चुनौतीपूर्ण सर्जरी कर जान बचा ली।

मरीज की हालत इतनी गंभीर थी कि चिकित्सकों को धड़कते दिल के साथ सर्जरी करनी पड़ी। चिकित्सीय भाषा में इसे ऑफ-पंप सर्जरी कहा जाता है। यह प्रक्रिया बेहद जोखिमभरी मानी जाती है और इसमें हार्ट-लंग मशीन का इस्तेमाल नहीं किया जाता। सफल सर्जरी के बाद छह दिनों तक गहन चिकित्सा और निगरानी में रखने के पश्चात मरीज को 3 सितंबर को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई।



नुकीली वस्तु से दिल में लगी गंभीर चोट, छह दिन के इलाज के बाद मिली अस्पताल से छुट्टी

एम्स ऋषिकेश के ट्रॉमा सर्जरी विभाग की ओर से यह जटिल सर्जरी 27 अगस्त को की गई। ट्रॉमा सर्जरी विभाग के प्रमुख प्रो. एम. क्यू. आजम ने बताया कि पेनिट्रेटिंग कार्डियक इंजरी यानी दिल में गहरी चोट के मामलों में उपचार के लिए समय बेहद महत्वपूर्ण होता है। ऐसे गंभीर मामलों में मरीज की जान

बचाने के लिए चिकित्सकों के बीच बेहतर समन्वय और टीमवर्क की अहम भूमिका रहती है।

सर्जरी करने वाले ट्रॉमा सर्जन डॉ. नीरज सिंह के अनुसार, 27 अगस्त को श्यामपुर निवासी एक युवक को गंभीर अवस्था में ट्रॉमा इमरजेंसी में भर्ती कराया गया था। मरीज के दिल में किसी नुकीली वस्तु से गहरी चोट लगी थी, जिसके कारण उसका रक्तचाप काफी कम हो गया था। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए चिकित्सकों ने तत्काल ऑपरेशन का निर्णय लिया और मरीज को इमरजेंसी लाइफ-सेविंग सर्जरी के लिए ले जाया गया।

डॉ. नीरज ने बताया कि मरीज की गंभीर स्थिति के कारण सर्जरी के दौरान हार्ट-लंग

मशीन का इस्तेमाल करना संभव नहीं था ऐसे में विशेषज्ञों ने धड़कते दिल के साथ ऑफ-पंप सर्जरी को अंजाम दिया। यह प्रक्रिया तकनीकी रूप से बेहद चुनौतीपूर्ण और जोखिमभरी थी, लेकिन चिकित्सकों के सामूहिक प्रयास से सर्जरी सफल रही। सर्जरी के बाद मरीज को छह दिनों तक गहन चिकित्सा एवं विशेष निगरानी में रखा गया।

स्वस्थ होने के बाद उसे 3 सितंबर को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। इस जटिल सर्जरी को अंजाम देने वाली ट्रॉमा सर्जरी टीम में डॉ. नीरज कुमार, डॉ. एकता, डॉ. रुशल और डॉ. गर्वित शामिल रहे। वहीं एनेस्थीसिया टीम में डॉ. प्रवीण तलवार, डॉ. संदीप और डॉ. मिन्हाज ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

नवोदय टाइम्स

ऑफ-पंप सर्जरी में एम्स ऋषिकेश को मिली बड़ी सफलता

■ छह दिनों के गहन इलाज और देखभाल के बाद मरीज को किया गया डिस्चार्ज

श्यामपुर, 12 सितंबर (नवोदय टाइम्स): नुकीली वस्तु से दिल में लगी गंभीर चोट (पेनिट्रेटिंग इंजरी) के मामले में एम्स ऋषिकेश के ट्रॉमा विशेषज्ञों की टीम ने एक जटिल सर्जरी को सफलतापूर्वक अंजाम दिया है। धड़कते दिल के साथ की गयी इस सर्जरी को चिकित्सीय भाषा में ऑफ-पंप सर्जरी कहा जाता है जो बहुत ही जोखिम भरी होती है। बेहद चुनौतीपूर्ण तरीके से की गयी यह सर्जरी संस्थान के ट्रॉमा विभाग द्वारा पिछले सप्ताह 27 अगस्त को की गयी थी।

ट्रॉमा सर्जरी विभाग के हेड प्रो. एम. क्यू. आजम ने बताया कि पेनिट्रेटिंग कार्डियक इंजरी (दिल में गहरी चोट लगना) में समय का बहुत महत्व होता है और ऐसे मरीजों की जान बचाने में आपसी तालमेल व टीमवर्क एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने कहा कि यह सफल परिणाम ट्रॉमा सर्जरी, एनेस्थीसिया, ट्रान्सफ्यूजन मेडिसिन और नर्सिंग टीमों के बीच बेहतरीन समन्वय (कोऑर्डिनेशन) के कारण ही संभव हो सका है। सर्जरी करने वाले ट्रॉमा सर्जन डा. नीरज सिंह ने बताया कि श्यामपुर निवासी 21 वर्षीय अखिल सती को उनके पिता द्वारा 27 अगस्त 2026 को मध्य रात्रि के दौरान गंभीर अवस्था में ट्रॉमा इमरजेंसी में भर्ती करवाया गया था। उन्होंने बताया कि घायल युवक के

दिल में किसी बहुत ही नुकीली वस्तु से गहरी चोट लगी थी और उसका वीपी लेवल बहुत कम हो गया था। दिल फट जाने से जीवन बचाने के लिए एक-एक मिनट का समय भारी पड़ रहा था। ऐसे में तत्काल सर्जरी करने का निर्णय लिया गया और घायल को इमरजेंसी लाइफ-सेविंग सर्जरी के लिए भेजा गया। डॉ. नीरज ने बताया कि मरीज की हालत इतनी गंभीर थी कि यह सर्जरी हार्ट-लंग मशीन के बिना करनी पड़ी। उन्होंने बताया कि सर्जरी उपरांत छह दिनों के गहन इलाज और समर्पित देखभाल के बाद मरीज को 3 सितंबर को डिस्चार्ज कर दिया गया। सर्जरी करने वाली डाक्टरों की टीम में ट्रॉमा सर्जन डॉ. नीरज कुमार के अलावा डॉ. एकता, डॉ. रुशल और डॉ. गर्वित शामिल थे। जबकि

एनेस्थीसिया टीम में डॉ. प्रवीण तलवार, डॉ. संदीप और डॉ. मिन्हाज का विशेष सहयोग रहा। संस्थान की कार्यकारी निदेशक प्रो. मीनू सिंह ने सर्जरी करने वाली टीम के कार्यों की सराहना की है। उन्होंने इसे उपलब्धि पूर्ण कार्य बताया।

ट्रॉमा सर्जरी विभाग के फैकल्टी डॉ. मधुर उनियाल ने कहा कि इस तरह की चोटों में जीवित रहने की दर (सर्वाइवल रेट) बहुत कम होती है। पिछले सात वर्षों से ट्रॉमा सर्जरी विभाग बहुत मजबूत हुआ है और विभाग इस तरह के दुर्लभ और चुनौतीपूर्ण मामलों को संभालने में पूरी तरह सक्षम है। उल्लेखनीय है कि उत्तराखंड में ट्रॉमा के लिए इस तरह की यह पहली ऑफ-पंप कार्डियक सर्जरी है जो एम्स द्वारा सफलतापूर्वक संपन्न की गयी।

आत्महत्या की रोकथाम को लेकर एम्स में लोगों को किया जागरूक

मदद मांगने और खुले संवाद को बढ़ावा देने पर जोर, नुक्कड़ नाटक भी पेश किया

ऋषिकेश, संवाददाता। विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस पर एम्स ऋषिकेश में जनजागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें वक्ताओं ने आत्महत्या की रोकथाम को बढ़ावा देने, मदद मांगने के व्यवहार को प्रोत्साहित करने और मानसिक स्वास्थ्य तथा आत्महत्या के आसपास खुले संवाद को बढ़ावा देने पर जोर दिया।

शनिवार को एम्स में मनोरोग विभाग, सीएनईआर और टेली-मानस के संयुक्त तत्वावधान में विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। संस्थान की कार्यकारी निदेशक एवं सीईओ प्रो. मीनू सिंह ने कहा कि देश में लगातार आत्महत्या के मामले बढ़ते जा रहे हैं। इसके लिए हमें मदद मांगने के व्यवहार को प्रोत्साहित करना होगा। मानसिक स्वास्थ्य तथा आत्महत्या के आसपास खुले संवाद को



एम्स ऋषिकेश में शनिवार को विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में शिरकत करते लोग। • हिन्दुस्तान

बढ़ावा देना होगा।

कार्यक्रम के दौरान ओपीडी क्षेत्र में नर्सिंग छात्रों द्वारा प्रस्तुत नुक्कड़ नाटक किया गया। जिसमें छात्रों ने आत्महत्या की बढ़ती घटनाओं की रोकथाम, शैक्षणिक दबाव से निपटने और घर पर एक सहयोगात्मक माहौल बनाने के महत्व को दर्शाया। नाट्य प्रस्तुति में भावनात्मक तनाव को पहचानने, आत्महत्या के विचारों के प्रति चुप्पी

तोड़ने और निराशा या आत्महत्या के विचार अनुभव कर रहे व्यक्तियों को समय पर पेशेवर व सामाजिक सहायता लेने के लिए प्रोत्साहित करने पर भी बल दिया गया।

इसी श्रृंखला में एम्स के कॉलेज ऑफ नर्सिंग में एक अन्य आकर्षक गतिविधि के अंतर्गत वॉल ऑफ होप आयोजित की गई। इस पहल ने छात्रों को सामुहिक रूप से समर्थन, लचीलेपन, करुणा और

उम्मीद का संदेश देने का अवसर प्रदान किया। इसके साथ ही स्टोन पेंटिंग के आयोजन के अंतर्गत छात्रों और चिकित्सा बिरादरी के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

मौके पर डीन एकेडमिक्स प्रोफेसर डॉ. सीरभ वाष्ण्य, मनोरोग विभाग के प्रोफेसर डॉ. अनिष्ट दास, कॉलेज ऑफ नर्सिंग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. रूपिंदर देओल आदि मौजूद रहे।

उत्तराखंड भास्कर

आपकी आवाज

आत्महत्या पर दृष्टिकोण बदलने की जरूरत, चुप्पी नहीं संवाद से मिलेगी राह

एम्स ऋषिकेश में विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस पर नुक्कड़ नाटक, वॉल ऑफ होप, स्टोन पेंटिंग और छात्र-शिक्षक संवाद आयोजित

ऋषिकेश। विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस-2026 के अवसर पर एम्स ऋषिकेश में विभिन्न जनजागरूकता एवं सहभागिता कार्यक्रम आयोजित किए गए। मनोरोग विभाग, सेंटर फॉर एक्सीलेस इन नर्सिंग एजुकेशन एंड रिसर्च (सीएनईआर) तथा टेली-मानस के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रमों के माध्यम से आत्महत्या को लेकर समाज में व्याप्त चुप्पी और कलंक को खत्म कर सहानुभूति, संवाद और समय पर मदद की संस्कृति विकसित करने का संदेश दिया गया। इस वर्ष की थीम "आत्महत्या पर दृष्टिकोण बदलना" (Changing the Narrative on Suicide) रही।

कार्यक्रम की शुरुआत एम्स के ओपीडी क्षेत्र में नर्सिंग छात्रों द्वारा प्रस्तुत नुक्कड़ नाटक से हुई। छात्रों ने शैक्षणिक दबाव, भावनात्मक तनाव और निराशा जैसी परिस्थितियों को समझने तथा ऐसे समय में परिवार और समाज की सहयोगात्मक भूमिका को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया।

इसके अलावा कॉलेज ऑफ नर्सिंग में "वॉल ऑफ होप" के माध्यम से विद्यार्थियों ने सकारात्मक संदेश एवं उम्मीद की अभिव्यक्ति की। वहीं स्टोन पेंटिंग गतिविधि में छात्रों और चिकित्सा बिरादरी के सदस्यों ने रंगों एवं रचनात्मक संदेशों के जरिए जीवन, आशा और आत्महत्या रोकथाम का संदेश दिया।



एम्स ऋषिकेश में विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित विशेषज्ञ, शिक्षक और छात्र-छात्राएं।

कार्यकारी निदेशक एवं सीईओ प्रो. (डॉ.) मीनू सिंह तथा डीन एकेडमिक्स प्रो. (डॉ.) सीरभ वाष्ण्य के नेतृत्व में आयोजित कार्यक्रमों के माध्यम से एम्स ऋषिकेश में मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता, आत्महत्या रोकथाम और सुलभ सहायता व्यवस्था को मजबूत करने की प्रतिबद्धता दोहराई। कार्यक्रम में यह संदेश प्रमुखता से दिया गया कि भुक्किल दौर से गुजर रहे व्यक्ति को चुप रहने के बजाय अपनी बात साझा करने और समय पर मदद लेने के लिए प्रोत्साहित करना जरूरी है।

इसी क्रम में "आत्महत्या पर दृष्टिकोण बदलना" विषय पर छात्र-शिक्षक संवाद आयोजित किया गया। इसमें शिक्षकों, वरिष्ठ चिकित्सकों और विभिन्न पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों से खुलकर चर्चा करते हुए मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं की शुरुआती पहचान, सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार, खुला संवाद और समय पर पेशेवर सहायता लेने की आवश्यकता पर जोर दिया।

कार्यक्रम में डीन एकेडमिक्स प्रो. सीरभ वाष्ण्य, प्रो. स्मृति अरोड़ा, प्रो. रवि गुप्ता, डॉ. वंदना कुमार दीगरा और मनोरोग विभागाध्यक्ष डॉ. विशाल धीमान सहित अन्य विशेषज्ञ एवं छात्र प्रतिनिधि शामिल हुए। सत्र का संचालन डॉ. दर्शना रामरखानी ने किया।